अध्याय 15: डॉ. भीमराव आंबेडकर - महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

(श्रम विभाजन और जाति-प्रथा तथा मेरी कल्पना का आदर्श समाज)

1. बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs)

1. **डॉ. भीमराव आंबेडकर का जन्म कब और कहाँ हुआ था?**
   - (क) 14 अप्रैल 1891, महू (मध्य प्रदेश)
   - (ख) 14 अप्रैल 1890, बनारस (उत्तर प्रदेश)
   - (ग) 2 अक्टूबर 1891, पोरबंदर (गुजरात)
   - (घ) 15 अगस्त 1891, दिल्ली
   - उत्तर: (क) 14 अप्रैल 1891, महू (मध्य प्रदेश)
2. **'श्रम विभाजन और जाति-प्रथा' पाठ किस विधा के अंतर्गत आता है?**
   - (क) कहानी
   - (ख) निबंध (भाषण का अंश)
   - (ग) रेखाचित्र
   - (घ) संस्मरण
   - उत्तर: (ख) निबंध (भाषण का अंश)
3. **आंबेडकर के अनुसार आदर्श समाज किन तीन तत्वों पर आधारित होना चाहिए?**
   - (क) शक्ति, भक्ति और मुक्ति
   - (ख) धन, पद और प्रतिष्ठा
   - (ग) स्वतंत्रता, समता और भ्रातृता
   - (घ) धर्म, जाति और वर्ग
   - उत्तर: (ग) स्वतंत्रता, समता और भ्रातृता
4. **जाति-प्रथा भारतीय समाज में बेरोजगारी का एक प्रमुख कारण क्यों बनी हुई है?**
   - (क) क्योंकि लोग काम नहीं करना चाहते

    - (ख) क्योंकि यह पेशा परिवर्तन की अनुमति नहीं देती
    - (ग) क्योंकि तकनीक का अभाव है
    - (घ) क्योंकि जनसंख्या अधिक है
    - उत्तर: (ख) क्योंकि यह पेशा परिवर्तन की अनुमति नहीं देती
5. 'एनीहिलेशन ऑफ कास्ट' का हिंदी रूपांतरण किस नाम से प्रसिद्ध हुआ?
    - (क) जाति का विनाश
    - (ख) जाति-भेद का उच्छेद
    - (ग) समाज का ढाँचा
    - (घ) दलितों का उत्थान
    - उत्तर: (ख) जाति-भेद का उच्छेद
6. आंबेडकर ने 'दासता' की व्यापक परिभाषा में किसे सम्मिलित किया है?
    - (क) केवल कानूनी पराधीनता को
    - (ख) दूसरों द्वारा निर्धारित व्यवहार एवं कर्तव्यों के पालन की विवशता को
    - (ग) केवल शारीरिक श्रम को
    - (घ) जेल में बंद कैदियों को
    - उत्तर: (ख) दूसरों द्वारा निर्धारित व्यवहार एवं कर्तव्यों के पालन की विवशता को
7. मनुष्य की क्षमता किन बातों पर निर्भर करती है?
    - (क) शारीरिक वंश परंपरा पर
    - (ख) सामाजिक उत्तराधिकार पर
    - (ग) मनुष्य के अपने प्रयत्नों पर
    - (घ) उपर्युक्त सभी पर
    - उत्तर: (घ) उपर्युक्त सभी पर
8. आंबेडकर के तीन प्रेरक व्यक्ति कौन थे?

    - (क) बुद्ध, कबीर और ज्योतिबा फुले
    - (ख) गांधी, नेहरू और पटेल
    - (ग) विवेकानंद, दयानंद और तिलक
    - (घ) मार्क्स, लेनिन और बुद्ध
    - उत्तर: (क) बुद्ध, कबीर और ज्योतिबा फुले

9. लेखक ने लोकतंत्र का दूसरा नाम क्या बताया है?
    - (क) बहुमत का शासन
    - (ख) भाईचारा (भ्रातृता)
    - (ग) चुनाव प्रणाली
    - (घ) राजतंत्र
    - उत्तर: (ख) भाईचारा (भ्रातृता)

10. जाति-प्रथा श्रम विभाजन के साथ-साथ और किसका रूप लिए हुए है?
    - (क) समाज विभाजन का

- (ख) श्रमिक विभाजन का
- (ग) राष्ट्र विभाजन का
- (घ) धर्म विभाजन का
- उत्तर: (ख) श्रमिक विभाजन का

2. एक पंक्ति वाले प्रश्न (Very Short Answer)

1. आधुनिक सभ्य समाज कार्य-कुशलता के लिए किसे आवश्यक मानता है?
    - उत्तर: आधुनिक सभ्य समाज कार्य-कुशलता के लिए 'श्रम विभाजन' को आवश्यक मानता है।
2. जाति-प्रथा में मनुष्य का पेशा कब निर्धारित कर दिया जाता है?
    - उत्तर: जाति-प्रथा में मनुष्य का पेशा उसके गर्भधारण के समय (माता-पिता के सामाजिक स्तर के अनुसार) ही निर्धारित कर दिया जाता है।

3. आंबेडकर ने किस शास्त्र को 'अनीति-शास्त्र' कहा है?

   ○ उत्तर: जाति-प्रथा का पोषण करने वाले अर्थशास्त्र को लेखक ने 'अनीति-शास्त्र' कहा है।

4. आदर्श समाज में 'गतिशीलता' का क्या महत्व है?

   ○ उत्तर: गतिशीलता से वांछित परिवर्तन समाज के एक छोर से दूसरे छोर तक संचारित हो सकते हैं।

5. 'भ्रातृता' या भाईचारे का वास्तविक रूप क्या है?

   ○ उत्तर: भाईचारे का वास्तविक रूप दूध और पानी के मिश्रण की तरह है।

6. फ्रांसीसी क्रांति के नारे में कौन सा शब्द विवाद का विषय रहा है?

   ○ उत्तर: 'समता' शब्द फ्रांसीसी क्रांति के नारे में विवाद का विषय रहा है।

7. आंबेडकर ने बौद्ध धर्म कब और कितने अनुयायियों के साथ अपनाया?

   ○ उत्तर: 14 अक्टूबर 1956 को 5 लाख अनुयायियों के साथ।

8. लेखक के अनुसार बेरोजगारी का प्रत्यक्ष कारण क्या है?

   ○ उत्तर: प्रतिकूल परिस्थितियों में भी पेशा बदलने की अनुमति न देना ही बेरोजगारी का प्रत्यक्ष कारण है।

9. जाति-प्रथा का श्रम विभाजन किस पर निर्भर नहीं रहता?

   ○ उत्तर: यह मनुष्य की स्वेच्छा, व्यक्तिगत भावना और रुचि पर निर्भर नहीं रहता।

10. समता को लेखक ने 'काल्पनिक जगत की वस्तु' क्यों कहा है?

   ○ उत्तर: क्योंकि पूर्णतः सभी मनुष्य समान नहीं हो सकते, फिर भी यह राजनीतिज्ञों के लिए एक व्यवहार्य सिद्धांत है।

3. तीन पंक्ति वाले प्रश्न (Short Answer)

1. जाति-प्रथा को श्रम विभाजन का ही एक रूप क्यों नहीं माना जा सकता?

    - उत्तर: क्योंकि जाति-प्रथा केवल श्रम का विभाजन नहीं करती, बल्कि श्रमिकों का भी अस्वाभाविक विभाजन करती है। यह समाज में ऊँच-नीच की श्रेणियाँ पैदा करती है और मनुष्य की रुचि की उपेक्षा करती है।

2. जाति-प्रथा बेरोजगारी और भुखमरी का कारण कैसे बनती है?
    - उत्तर: हिंदू धर्म की जाति-प्रथा व्यक्ति को उसका पैतृक पेशा छोड़कर नया पेशा अपनाने की अनुमति नहीं देती। जब तकनीक बदलती है और पुराना पेशा अनुपयोगी हो जाता है, तो व्यक्ति के पास भूखों मरने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचता।
3. आंबेडकर के अनुसार 'आदर्श समाज' की परिभाषा क्या है?
    - उत्तर: आंबेडकर के अनुसार आदर्श समाज वह है जो स्वतंत्रता, समता और भ्रातृता पर आधारित हो। जहाँ समाज के हितों में सबका समान भाग हो और सामाजिक जीवन में अबाध संपर्क के अवसर उपलब्ध हों।
4. लेखक ने लोकतंत्र को केवल 'शासन पद्धति' मानने से इनकार क्यों किया है?
    - उत्तर: लेखक के अनुसार लोकतंत्र केवल शासन का तरीका नहीं है, बल्कि यह मूलतः सामूहिक जीवनचर्या की एक रीति और समाज के सम्मिलित अनुभवों के आदान-प्रदान का नाम है। इसमें साथियों के प्रति सम्मान अनिवार्य है।
5. समता के विरुद्ध दिए जाने वाले तर्कों का आंबेडकर ने क्या उत्तर दिया है?
    - उत्तर: वे स्वीकार करते हैं कि वंश और प्रयत्नों के आधार पर मनुष्य असमान हो सकते हैं, लेकिन वे तर्क देते हैं कि समाज को अधिकतम उपयोगिता प्राप्त करने के लिए सभी को समान अवसर और समान व्यवहार प्रदान करना चाहिए।
6. जाति-प्रथा आर्थिक पहलू से हानिकारक क्यों है?
    - उत्तर: क्योंकि यह मनुष्य की स्वाभाविक प्रेरणा और आत्म-शक्ति को दबा देती है। लोग अरुचि के साथ विवशतावश काम करते हैं, जिससे कार्य-कुशलता घटती है और आर्थिक विकास अवरुद्ध होता है।
7. 'दासता' केवल कानूनी पराधीनता क्यों नहीं है?

- उत्तर: दासता का अर्थ है ऐसी स्थिति जहाँ व्यक्ति को दूसरे लोगों द्वारा निर्धारित कर्तव्यों का पालन करने के लिए मजबूर होना पड़ता है। यदि समाज का कोई वर्ग किसी की इच्छा के विरुद्ध पेशा थोपता है, तो वह भी दासता है।

8. राजनीतिज्ञ के लिए 'समता' एक व्यवहार्य सिद्धांत क्यों है?
   - उत्तर: एक राजनीतिज्ञ को बहुत बड़ी जनसंख्या के साथ व्यवहार करना पड़ता है। उसके पास हर व्यक्ति की अलग-अलग क्षमताओं को जानने का समय नहीं होता, इसलिए मानवता के आधार पर वह सबको समान मानकर व्यवहार करता है।
9. मनुष्य की व्यक्तिगत रुचि का श्रम विभाजन में क्या महत्व है?
   - उत्तर: व्यक्तिगत रुचि काम में मन लगाने के लिए आवश्यक है। यदि काम रुचि के अनुसार हो, तो व्यक्ति कुशलता प्राप्त करता है। रुचि के अभाव में काम 'टालू' हो जाता है और गुणवत्ता गिर जाती है।
10. आंबेडकर ने 'जाति-पाँति तोड़क मंडल' के सम्मेलन के बारे में क्या बताया है?
    - उत्तर: यह भाषण (एनीहिलेशन ऑफ कास्ट) 1936 में लाहौर सम्मेलन के लिए तैयार किया गया था, लेकिन इसकी क्रांतिकारी दृष्टि के कारण आयोजकों की सहमति नहीं बन पाई और सम्मेलन स्थगित हो गया।

4. पाँच से छह पंक्ति वाले प्रश्न (Long Answer)

1. 'श्रम विभाजन और जाति-प्रथा' पाठ के माध्यम से लेखक ने किन सामाजिक विडंबनाओं पर प्रहार किया है?
   - उत्तर: लेखक ने आधुनिक युग में भी 'जातिवाद के पोषकों' की मौजूदगी को विडंबना माना है। वे प्रहार करते हैं कि सभ्य समाज के नाम पर लोग श्रम विभाजन के बहाने जाति-प्रथा का समर्थन करते हैं। यह प्रथा न केवल श्रमिकों का अस्वाभाविक विभाजन करती है, बल्कि उन्हें ऊँच-नीच की श्रेणियों में बाँटकर समाज में द्वेष पैदा करती है। यह मनुष्य के प्रशिक्षण और क्षमता की अनदेखी कर जन्म के आधार पर भाग्य तय कर देती है। लेखक का मानना है कि जब तक सामाजिक दासता समाप्त नहीं होगी, तब तक वास्तविक स्वतंत्रता का कोई अर्थ नहीं है।
2. जाति-प्रथा के आर्थिक दुष्प्रभावों का विस्तार से वर्णन कीजिए।

- उत्तर: आर्थिक दृष्टि से जाति-प्रथा अत्यंत घातक है क्योंकि यह कार्य-कुशलता को नष्ट करती है। यह मनुष्य की व्यक्तिगत भावनाओं और रुचि को महत्व नहीं देती, जिससे लोग 'अरुचि' के साथ काम करते हैं। इसके परिणामस्वरूप 'टालू काम' करने की प्रवृत्ति बढ़ती है। सबसे महत्वपूर्ण दुष्प्रभाव यह है कि यह पेशा परिवर्तन की स्वतंत्रता छीन लेती है, जिससे आधुनिक औद्योगिक युग में तकनीक बदलने पर लोग बेरोजगार हो जाते हैं। प्रतिकूल परिस्थितियों में भी भूखों मरने को विवश होना जाति-प्रथा की सबसे बड़ी आर्थिक मार है।

3. आंबेडकर की कल्पना के 'आदर्श समाज' की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
   - उत्तर: आंबेडकर का आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता और भ्रातृता के त्रिकोण पर टिका है। इसमें इतनी गतिशीलता होनी चाहिए कि कोई भी सुधार समाज के हर कोने तक पहुँच सके। इसमें 'बहुविधि हितों' में सबका भाग होना चाहिए। वे भाईचारे को 'लोकतंत्र' का पर्याय मानते हैं, जहाँ लोग दूध-पानी की तरह मिलकर रहते हैं। उनके आदर्श समाज में व्यक्ति को अपना व्यवसाय चुनने की पूर्ण स्वतंत्रता है और समाज के हर सदस्य को अपनी क्षमता विकसित करने का समान अवसर प्राप्त है।

4. "स्वतंत्रता के बिना समता और समता के बिना स्वतंत्रता अधूरी है"– आंबेडकर के विचारों के संदर्भ में व्याख्या करें।
   - उत्तर: लेखक का मानना है कि यदि केवल स्वतंत्रता दी जाए और समता न हो, तो शक्तिशाली लोग कमजोरों पर हावी हो जाएंगे, जो अंततः स्वतंत्रता को विशेषाधिकार में बदल देगा। दूसरी ओर, यदि केवल समता थोपी जाए और स्वतंत्रता न हो, तो व्यक्ति की रचनात्मकता और निजी प्रयास खत्म हो जाएंगे। इसलिए, एक न्यायपूर्ण समाज के लिए दोनों का संतुलन आवश्यक है। समता और स्वतंत्रता के साथ 'भ्रातृता' (भाईचारा) वह कड़ी है जो इन दोनों को समाज में जीवित और सार्थक बनाए रखती है।

5. समता को एक 'नियामक सिद्धांत' क्यों माना जाना चाहिए? आंबेडकर के तर्कों की समीक्षा करें।
   - उत्तर: आंबेडकर स्वीकार करते हैं कि शारीरिक बनावट, सामाजिक विरासत और निजी प्रयासों के कारण लोग असमान हो सकते हैं। लेकिन वे तर्क देते हैं कि जो चीजें मनुष्य के वश में नहीं हैं (जैसे जन्म), उनके आधार पर उसके साथ

असमान व्यवहार करना अन्यायपूर्ण है। समाज को अपने सदस्यों से अधिकतम लाभ लेने के लिए उन्हें आरंभ से ही समान अवसर देने चाहिए। एक राजनीतिज्ञ के लिए समता एक व्यावहारिक कसौटी है क्योंकि वह मानवता के दृष्टिकोण से समाज को श्रेणियों में नहीं बाँट सकता। अतः समता एक आवश्यक नियामक सिद्धांत है।

6. लेखक ने 'दासता' की जो परिभाषा दी है, वह आज के संदर्भ में कितनी प्रासंगिक है?

    ○ उत्तर: आंबेडकर के अनुसार दासता केवल जंजीरों में बंधना नहीं है, बल्कि अपनी इच्छा के विरुद्ध दूसरों द्वारा तय किए गए काम को करना है। आज भी हम देखते हैं कि आर्थिक मजबूरी या सामाजिक दबाव के कारण कई लोग ऐसे पेशे अपनाते हैं जिनमें उनकी रुचि नहीं है। यदि किसी को शिक्षा या करियर चुनने की आजादी नहीं है, तो वह आधुनिक युग की दासता ही है। यह परिभाषा हमें यह सोचने पर मजबूर करती है कि क्या हम वास्तव में स्वतंत्र हैं या अभी भी अदृश्य सामाजिक जंजीरों में जकड़े हुए हैं।

7. आंबेडकर के चिंतन और रचनात्मकता के प्रेरक तत्वों का वर्णन करें।

    ○ उत्तर: डॉ. आंबेडकर के चिंतन के मुख्य रूप से तीन प्रेरक रहे– बुद्ध, कबीर और ज्योतिबा फुले। भगवान बुद्ध से उन्होंने 'समता' और 'करुणा' का दर्शन लिया। कबीर से उन्होंने जातिगत आडंबरों के विरोध और तार्किकता की प्रेरणा ली। महात्मा ज्योतिबा फुले से उन्होंने दलितों और स्त्रियों की शिक्षा तथा सामाजिक क्रांति का पाठ सीखा। इन तीनों का प्रभाव उनके पूरे लेखन और संघर्ष में दिखाई देता है। यही कारण है कि उन्होंने हिंदू समाज की बुराइयों से तंग आकर बुद्ध के समतावादी मार्ग को चुना और सामाजिक मुक्ति का संकल्प पूरा किया।

8. "यथा प्रजा तथा राजा" कथन के माध्यम से लेखक क्या संदेश देना चाहते हैं?

    ○ उत्तर: अक्सर कहा जाता है "यथा राजा तथा प्रजा" (जैसा राजा वैसी प्रजा), लेकिन आंबेडकर ने इसके उलट "यथा प्रजा तथा राजा" का समर्थन किया है। उनका संदेश है कि लोकतंत्र में जनता का आचरण ही सत्ता और शासन के स्वरूप को निर्धारित करता है। यदि समाज स्वयं में समानता, भाईचारा और न्याय को अपनाएगा, तो शासन भी वैसा ही होगा। यह नागरिकों की सामूहिक जिम्मेदारी और आचरण की शुद्धता पर बल देता है। यह गांधी जी के

'स्वराज' के विचार से भी मेल खाता है कि सुधार की शुरुआत स्वयं से और समाज से होनी चाहिए।

9. जाति-प्रथा का 'पूर्वनिर्धारण' का सिद्धांत मनुष्य के व्यक्तित्व को कैसे कुंठित करता है?

    - उत्तर: जाति-प्रथा गर्भधारण के समय ही मनुष्य का पेशा और सामाजिक स्तर तय कर देती है। इससे व्यक्ति की अपनी रुचि, प्रतिभा और सपनों का गला घोंट दिया जाता है। यदि किसी बच्चे में चित्रकार बनने की प्रतिभा है लेकिन उसका जन्म किसी ऐसे वर्ग में हुआ है जहाँ केवल शारीरिक श्रम ही नियत है, तो उसकी क्षमता कभी विकसित नहीं हो पाएगी। यह सिद्धांत मनुष्य को एक मशीनी पुर्जे की तरह बना देता है, जिससे उसका मानसिक और आत्मिक विकास रुक जाता है और वह कुंठा का शिकार हो जाता है।

10. पाठ के आधार पर सिद्ध कीजिए कि आंबेडकर एक 'मानवतावादी' विचारक थे।

    - उत्तर: डॉ. आंबेडकर का पूरा संघर्ष और लेखन मानव-मुक्ति के लिए था। वे केवल एक जाति विशेष की बात नहीं करते, बल्कि अछूतों, स्त्रियों और मजदूरों के अधिकारों की वकालत करते हैं। उनका 'आदर्श समाज' किसी धर्म या जाति पर नहीं, बल्कि 'मानवता' के सार्वभौमिक मूल्यों (स्वतंत्रता, समता, भ्रातृता) पर आधारित है। वे ज्ञान को केवल पुस्तकीय ज्ञान नहीं, बल्कि जन-कल्याण का साधन मानते थे। उनके लिए व्यक्ति की गरिमा और सम्मान सर्वोपरि था, जो उन्हें एक महान मानवतावादी विचारक के रूप में प्रतिष्ठित करता है।